सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप,सितम्बर-अक्तूबर, 2007

विजेताओं का बैंक

तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। (यहोशू १:५)

यह एक उदात्त प्रतिज्ञा है। उसका यह मतलब है कि सूरज के नीचे ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो यहोशू के विरूद्ध खड़ा हो पायेगा।

तत्वज्ञ, युवराज हो या राजा, कोई भी उसके सामने टिक नही पायेगा। कैसी महान प्रतिज्ञा! प्रतिज्ञाएं, परमेश्वर के चेकबुक हैं। परमेश्वर से प्रतिज्ञा को पाना एक बात है, तो उसे सँभाले रखना दूसरी बात है। एक बार एक महिला को रास्ते पर सोना पढ़ा मिल गया। उसे समझ नहीं आया कि अपनी जर्जर झोंपड़ी में किधर उसे छिपाये। उसके पास और कोई दूसरी बेहतर जगह न थी। देहातों में लोग अपने सोने को घड़ों में रखा करते है। उनमें से किसी मे छिपाकर रखते हैं। मगर चोर और डाकू उसे खोज निकालते है। क्या तुम्हें पता है कि परमेश्वर के वादों को कहां छिपाये? मुझे लगता है कि जब यहोशू को ऐसी महान प्रतिज्ञा मिली, वह खुशी से लोट पोट हो गये होंगे। कोई भी आदमी उसके सामने खड़ा नही रह पायेगा - वह दिव्य सहायता से अपराजय है। यह एक महान विषय है। नेपोलियन नही, हिटलर नही, कोई तत्वज्ञ भी उनका मुकाबला नही कर पायेगा। यहोशू को इस बात का बहुत गर्व होता होगा। जब परमेश्वर के वादे तुम्हें दिये जाते है तो तुम्हें पूछना चाहिए, 'प्रभु, मैं इसे किस तरह सँभालूँ?'

उदाहरणार्थ, धनी मूर्ख के दृष्टान्त में, लगता

पृष्ठ २ पर..विजेताओं का बैंक..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

"परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह 7:00 बजे

कार्य करता परमेश्वर

व्यापार में, सरल-कारगर प्रबन्धक प्रणाली तथा सुव्यवस्थित प्रशासन - ऐसा काल में हम जी रहें है। हम यह सोचने का साहस कर रहे हैं कि अपनी बुद्धि द्वारा हम परमेश्वर के ज्ञान को और अधिक विकसित कर सकते हैं। यह निःक्षमा योग्य अहंकार के सिवाय और कुछ नही।

व्यापारी जो अपने कारोबार को बहुत कुशलता से चलाते हैं, ऐसे लोगों को कलीसिया की मंडली में और अगुवाई करने के लिए चुना जा रहा है। उन्हें यकीन है कि अब से कलीसियाँ, बहुत अच्छे वित्तीय आधार पर चलेगी। व्यवसायी जानते होंगे कि वे अपने व्यापार को कैसे चलायें; मगर जीवित परमेश्वर खूब अच्छी तरह जानते हैं कि वे अपनी कलीसियाँ को कैसे चलायें। प्रभु यीशु मसीह की कलीसियाँ को हम प्रबंधित करके चला रहें है - वास्तव में, यह बड़ी गलत सोच है।

बाइबल कहता है, 'इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में दृढ़ होती गईं और संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई।' (प्रेरितों के काम १६:५) यहाँ हम क्रम पर ध्यान दें। लोग पहले पवित्र जीवन जीने में स्थिर हुए। १५ वें अध्याय में, कलीसिया के प्रमुखों ने यह आज्ञा जारी की कि 'मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाई गई वस्तुओं से, लहू से गला घोंटे हुओं के मांस से, तथा व्यभिचार से परे रहो।' यहाँ पवित्र जीवन का आचरण करने के लिए, परमेश्वर का दिया हुआ नियम है। अगर ये आदमी दुबारा व्यभिचार तथा मूर्ति पूजा और उनके आचरण की ओर फिरे तो परमेश्वर से संगति संभव नहीं होगी। जब एक कलीसिया अपने आपको शुद्ध करके, परमेश्वर के आधीन होकर विनम्रता से चलने लगेगी तो वहाँ आशीष की बढ़ौती होगी। तब जीवित उद्धारकर्ता को किस रीति और किस तरह महिमा पहुँचाएँ, इस बात पर सारा ध्यान केन्द्रित होगा। जब तुम्हारा हृदय, यीशु को महिमान्वित करने की इच्छा से भर जाए, तब कई ध्यान भंग करनेवाले, तुच्छ और मूर्खता पूर्ण आडम्बर, तुम से बहुत दूर रहेंगे। परमेश्वर से तुम्हारा आत्मा संपर्क में रहेगा तथा तुम्हारी आत्मा, गुमराह लोगों को खोजने में तेज हो जायेगी। लगातार पापियों का हृदय-परिवर्तन होना, नये और कठिन स्थानों पर कलीसियाँओं का उठना, अब तक न पहुँच पाए तथा दूर दराज के क्षेत्रों में भी आत्मायें जीतने का प्रयास - यह सब अपने आप संभव होंगे।

यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि कई लोगों की ऐसी धारणा है - पैसों से ही परमेश्वर का कार्य किया जाता है। मैं यह जोर देकर कहता हूँ कि यह सच नही। इसके विपरीत, जब किसी की ज्यादा से ज्यादा पैसे और वस्तुओं की संमृद्धी होने लगे तो उसका आध्यात्मिक जीवन नाक के बल डुबकी लगाएगा। पैसों से इमारतों का निर्माण हो सकता है, पैसों से महेंगे स्मारक बन सकते है तथा पैसों से महान मकबरें बन सकते है। मगर पैसों से एक भी पापी का हृदय परिवर्तन कभी नही हो सकता। मसीह की ओर, बहुत बड़ी संख्या में आदमी और औरतें जब फिरते देखते है तो, पूर्वी देशों के लोग, तुरन्त इस नतीजे पर पहुँचते है कि इस सबके पीछे बहुत पैसे लगाए गए होंगे।

प्रभु यीशु मसीह ने अपना कार्य ऐसे हालात मे किया जबकि उनके पास महसूलदार को कर चुकता करने के लिए भी पैसे नहीं थे। उन्हें शमौन पतरस को झील में बंसी डालकर, जो मछली पहिले ऊपर आए, उसका मुंह खोलने पर मिलनेवाले सिक्के को लाने भेजना पड़ा। जब पतरस और यूहन्ना प्रार्थना करने देवालय में गये थे, उनके पार दो पैसे भी नहीं थे। मंदिर के फाटक पर बैठे, लंगड़े भिखारी की चंगाई का चमत्कार तथा उसके बाद परमेश्वर के वचन का उपदेश-परिणाम स्वरूप उस दिन ५००० आदमियों ने अपना मन फिराया।

हाँ, परमेश्वर ने अपने बच्चों को अपनी जरूरत के अनुसार प्रतिदिन मन्ना दिया। आज हमें, हर दिन विश्वास, प्रेम, पवित्रता की ताजा खुराक की जरूरत है। तब प्रतिदिन, परमेश्वर के राज्य में लोगों को प्रवेश करते देख पायेंगे। मसीही जीवन

पृष्ठ २ पर..कार्य करता परमेश्वर.. पृष्ठ १

पृष्ठ १ से..कार्य करता परमेश्वर...

एवं क्रियाकलाप के किसी भी भाग में हार, बहुत ही अस्वाभाविक, खतरनाक और अनर्थकारी है। अगर हम विश्वास में प्रतिदिन नही बढ़ते तो, जल्दी ही शैतान हमें दहशत, अनिश्चयता एवं अयोग्य स्थिति में पहुँचा देगा। अगर यीशु के चरणों में, हम हर रोज जीवन की रोटी को नही बटोरते, तो प्रेम की संवेदना और ज्वाला मंद हो जायेगी। और हम प्रतिदिन लोगों तक पहुँच नही पायेंगे। हमारी प्रार्थना में उत्सुक्ता नही रहेगी। तथा हमारे सारे आध्यात्मिक यंत्र-सामग्री में जंग लग जायेगा, यहाँ तक की सब नाकाम हो जायेंगे।

- जोशुआ दानियेल।

पृष्ठ १ से..विजेताओं का बैंक...

है कि वह आदमी बहुत धनवान है। और उसकी भूमि में बहुत अधिक उपज हुई। तब उसने कहा, 'मैं ऐसा करूँगा कि अपनी बखारियों को तोड़कर बड़ी बखारियाँ बनाऊँगा।' एक तरह से, उसे समझ थी कि वह अपने चीजों को कहाँ रखे। क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर के वादों को कहाँ रखे?

साधारणतः जब हमारे पास अधिक पैसे हों, तो हम उसे अपने पास नही रखते। हम उसे बैंक में जमा करते है। ऐसा कौन सा बैंक है जो हमारे प्रतिज्ञाओं को संभाल कर रख पाये? हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को खोना नही चाहिए। तुम अपने सारे धन को कहाँ रखने जा रहे हो? ऐसा कौन सा बैंक है? कभी कभी तुम बैंक में जाकर अपने जमाकोष का पता लगा सकते हो।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के साथ पूरा स्वर्ग है। जब मैं यहोशू को मिली प्रतिज्ञाओं को पढ़ता हूँ तो मैं काँपता हूँ। परमेश्वर के सामने जब तुम खड़े हो तो तुम्हें थरथराना चाहिए। क्या तुम्हारे पास परमेश्वर के वादे हैं? 'कोई तेरी युवावस्था को तुच्छ न समझे, परन्तु तू वचन, व्यवहार, प्रेम, विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा।' (१ तीमुथियुस ४:१२) इस पर गौर करें।

अगर तुम्हारे पास परमेश्वर के वादे हैं तो उन्हें सँभाले रखो। अपने वचन, आदर्श, व्यवहार, प्रेम, आत्मा, विश्वास और पवित्रता - इन सब के विषय में सावधान रहो। तुम यदि किसी एक वादे के प्रति भी लापरवाह हो गए तो, परमेश्वर के वादों को खो बैठोगे और वे नाकाम होंगे। परमेश्वर के वादों को तुम संभाल नही पाये। इब्राहीम लापरवाह था। परमेश्वर ने उनसे कहा, 'तुम सिद्ध बनो। नहीं तो मेरी वाचा असफल हो जायेंगी। मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। मैं अपनी वाचा को सफल बनाने में असमर्थ नही हूँ। तुम सोचते हो कि मैं तुम जैसे ही आम मानव हूँ। कुछ समय तुम अपनी पत्नी की सुनते हो। और कुछ समय अपनी ही मनमानी करते हो। और अंत में चाहते हो कि मेरा वादा सफल हो जाय। मैं तुम्हारे समान मानव नही हूँ। मैं एक सिद्ध परमेश्वर हूँ। मुझमें कुछ भी चंचलता नहीं है। जब तक मैं अपने वादों को सफल न बनाऊँ, मुझे चैन नही मिलता। अगर तुम मेरे प्रतिज्ञाओं को एहम मानते हो और अपने आप को मेरे वचन-बद्ध बनाओ, तब सारे पूरे किये जायेंगे। तुम्हारे द्वारा तुम्हारे सारे वंशज आशीषित किये जाएंगे। मगर इब्राहीम, तुम आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त नही कर रहे हो।'

हम में से कई, प्रतिज्ञाएँ पाकर आत्मिक रूप से ऊंघने लगते हैं। हमें सतर्क रहना है। तुम एक महान परमेश्वर के पीछे चल रहे हो। वह एक अस्थिर-मन वाला आदमी नही है। आम आदमी के जैसे, तुम उनसे बरताव कर रहे हो। उनकी वाचा को तोड़ा नही जा सकता। मगर तुम्हें उनकी कद्र नही। तुम अपनी नींद में जागरूक रहो। अपने चाल-चलन का ध्यान रखो। अपने व्यवहार में सावधान रहो। परमेश्वर का धन तुम्हारे हवाले है। इसलिए तुम्हें सावधान रहना है। अपनी वेष-भूषा के बारे में, अपने मन में चल रहें विचारों के प्रति सावधान रहो। तुम्हारे आधीन जो चीज समृद्ध है उसके प्रति सावधान रहो। समपनन्ता की स्थिति में सही रास्ते से भटकने की प्रवृत्ति हम में है। 'सन्तोष सहित भक्ति वास्तव में महान कमाई है।' (१तीमुथियुस ६:६) क्या तुम्हारी भक्ति सन्तोष सहित है? क्या तुम संतुष्ट हो? क्या तुम्हें लगता है कि जो तुम्हारे पास है वह तुम्हारे लिए काफी है? 'मेरे दोस्त के पास मोटर कार है। मुझमें यह गुप्त इच्छा भी नहीं है। अगर मुझे जरूरत है तो परमेश्वर मुझे देंगे।' - क्या तुम ऐसा महसूस करते हो?

परमेश्वर से तुम पूछ सकते हो, 'प्रभु, क्या मेरी सारी प्रतिज्ञायें सुरक्षित है?' कुछ लोग अपने वादों को खो देते है। परमेश्वर यहोशू से क्या कह रहें है? 'व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुंह से कभी दूर न हो, परन्तु इस पर दिन-रात ध्यान करते रहना जिस से तू उसमें लिखी हुई बोतों के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके।' (यहोशू १:८) अगर तुम उन पर ध्यान नही करते तो तुम उन्हें खो सकते हो। तुम्हारा बैंक में जमा शुल्क बुरी तरह से खाली हो जायेगी। कुछ समय बाद तुम्हारा जमा शेष खाली हुआ हो, तो तुम्हें ऋण (ओवर-ड्राफ्ट) का खतरा हो जाएगा। तुम्हारे पास स्थित रकम अपनी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त नही होगी। जब तुम अपनी जिन्दगी में, परमेश्वर के वचन का पालन नही करते, तो तब तुम इस स्थिति में होगे। बीस साल पहले तुम्हें एक प्रतिज्ञा मिली होगी। मगर अब तुम्हारे पास कुछ भी नही बचा। शैतान ने सब कुछ चुरा लिया है। लगभग दिवालेपन की दहलीज पर हो। हार का सामना कर रहे हो। एक बार यहोशू 'ऐ' के विरुद्ध गया। उधर उन्होंने प्रतिकूलता का सामना किया। क्या तम्हारा आध्यात्मिक जीवन ठीक-ठाक है?

क्या तुम मिले हुए वादों के विषय में निश्चित हो। यहोशू के विषय में महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने जीवन भर मिले हुए वादों को सँभाले रखा। अपने हृदय के अत्यंत गुप्त स्थान को खोल कर देखो तो क्या तुम वहाँ परमेश्वर के वादों को सुरक्षित पाओगे? यह कितनी महत्वपूर्ण बात है!

मगर शैतान चाहता है कि इन वादों के साथ और कुछ जोड़े। शैतान भी कई चीजों का वादा करता है। तुम सन्तुष्टता से कहते, 'अगर परमेश्वर नही

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

देते, तो वह मुझे नही चाहिए। अगर समय से पहले ही मुझे एक कार मिलती तो, मैं और मेरे परिवार का नाश हो जाता।' सन्तोष सहित भक्ति महान कमाई है। 'मेरे पास एक ही पोशाक है। उसी से सारा काम चल जायेगा। मेरे पास एक बाइबल है। और मैं उसका अध्ययन करने में समर्थ हूँ। यह मेरे लिए काफी है।' इस तरह तुम अपने हृदय में ध्यान मग्न होते। तुम ऐसी ही नसल में आगे बढ़ते: 'मुझे परमेश्वर के जनों का साथ मिला है। परमेश्वर ने मुझे धर्मपरायण पत्नी दी है। यह मेरे लिए एक पूँजी है। मेरे जीवन का सहारा बनने, परमेश्वर ने मुझे सन्तान दी है। परमेश्वर की महिमा के लिए मैं उनकी परवरिश करूँगा। मुझे आगे और कुछ नही चाहिए।' सदोम का राजा अब्राम के पास सोना लाया। मगर अब्राम ने कहा 'मैंने स्वर्ग और पृथ्वी के परम प्रधान परमेश्वर यहोवा की शपथ ली है, मुझे तुम्हारा, सोना नही चाहिए। कल तुम यह कहने में मजबूर न हो कि मैंने अब्राम को धनी बना दिया है।'

मगर परमेश्वर ने अब्राम को पुत्र दिया, जिसे स्वर्ग ने भी मूल्यवान समझा। परमेश्वर ने उनको प्रतिज्ञायें दी, जो संसार उनसे छीन नही पाया।

यहोशू ने अपनी जीवनकाल की सन्ध्या में, एक अद्भुत उपदेश दिया। 'मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करूँगा।' (यहोशू २४:१५) उन वादों को उन्होंने संभाल कर रखा। उन वादों को अपने बच्चों के आधीन करने तक, उन्हें कम होने या नष्ट होने नही दिया। 'मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ।' (२ तीमुथियुस ४:७) हम में से कितने यह कह पाएंगे?

क्या तुम परमेश्वर के वादों को बहुमूल्य समझते हो? परमेश्वर ने मुझे कुछ वाचाएं दी हैं। तब मैं अपनी डडङउ में पढ़ रहा था। यहेजकेल (३६:२५-२७) तथा यिर्मयाह (१७:१४) - यह दोनों वादे मेरे जीवन के आधार रहें है। परमेश्वर कहते है, 'मैं अपने हाथों में तुझे ढांप लूंगा क्यों कि तुमने मेरे वादों को अपने हृदय में छिपा लिया है।'

प्रिय जनों, हम महान परमेश्वर के आधीन है। वह अपनी वाचा को निभाने और अपने आप को सिद्ध करने के लिए उत्सुक है। आने वाली पीढ़ी तुम्हारी वजह से आशीर्वाद पाएंगी। टूटे-फूटे स्थानों का तुम पुनः निर्माण करोगे। हर कोई खँडहर जिसे तुम छूते हो, वह पुनः स्थापित होगा। जहाँ तुम्हारा कदम पड़े वहाँ दुबारा जीवन प्राप्त होगा। परम-संगीत से तुम्हारा जीवन भर जायेगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञायें तुम्हारे जीवन को फलदायक बनायेंगी।
- स्वर्गीय श्रीमान एन. दानिय्येल।

विश्राम दिन को स्मरण रखना

स्विट्जरलैंड की एक खूबसूरत वादी में एक किसान रहता था। वह ना ही परमेश्वर का भय मानता था और ना ही किसी आदमी को एहमियत देता था। वह हर विषय में अपनी ही मन मानी करना चाहता था।

वह फसल की कटाई का समय था। एक रविवार दोपहर, बहुत तादाद मे कटी हुई फसल खेत में पड़ी थी। पहाड़ों को घेरते घने बादल और झरना पानी से भरते देखकर, उन्होंने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'आओ हम खेत में चले, फसल एकत्र करके, बाँध कर लाये, क्यों कि शाम तक तुफान आने वाला है।' ऐसा कहते उसकी नानी ने सुना। वह अस्सी साल की भली औरत थी। वह लाठी के सहारे चलते, बड़ी मुश्किल से अपने पोते के पास आयी।

'जॉन, जॉन' उसने कहा, 'क्या तुझे ध्यान नही? जहाँ तक मुझे याद है अपनी पूरी जिंदगी में मकई की एक बाली तक, प्रभु के दिन नही समेटा गया। फिर भी हमें भर पूर आशीष मिली। हमें किसी चीज़ की कमी न रही। साल भर, अब तक तो सूखा था। अनाज तोड़ा सा गीला हो जाय तो भी हैरान होने की कुछ भी बात नहीं। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर जो अनाज देते है, बारिश भी वहीं देते है। जैसा वह देते है वैसे ही हमें लेना है। जॉन, इस पवित्र दिन के विश्राम का उलंघन मत करना। मैं अनुनय तुमसे विनती करती हूँ।'

नानी के इन शब्दों को सुनकर, सब नौकर उसके चारों ओर इकट्ठे हुए, उनमें उम्र में बड़े तो उसकी सलाह के ज्ञान को समझ पाये। मगर नवजवान ने उसे हँसी में उड़ाया। और एक दूसरे से कहने लगे, 'आज, पुरानी प्रथाएँ तो पुरानी हो गयी हैं; पूर्वाग्रह विचारों का अंत हुआ, आज संसार पूरी तरह से बदल गया है।'

'नानी', किसान ने कहा, 'पूरा दिन परिश्रम करते बिताए या विश्राम करते नींद में, हमारा परमेश्वर इन सब से परे और उदासीन है। परमेश्वर, जैसे बारिश मे भीगते अनाज को देखते, वैसे और उतनी ही मकई को अटारी में अनाज को देखकर, पूरी तरह से प्रसन्न होंगे। जिसे हम सुरक्षित समेटते उससे हमारा पोषण होगा। और कल कैसा मौसम होगा कोई नही बता सकता।'

'जॉन, जॉन घर के बाहर हो या भीतर, सब बातें प्रभु के नियंत्रण में है। आज शाम क्या होने वाला है, तुम बता नही सकते। परमेश्वर के प्रेम के वास्ते मैं तुमसे विनती करती हूँ कि आज काम ना करो। चाहो तो मैं साल भर रोटी ना खाने के लिए तैयार हूँ।'

'नानी, एक बार करो तो वह आदत नही कहलाती। किसी की फसल को सुरक्षित एकत्र करना और किसी की हालत को सुधारना बुराई नहीं होती।'

'मगर, जॉन,' भली औरत ने कहा, 'परमेश्वर की आज्ञाएँ हमेशा एक समान हैं। धान्य को धान्यागार में बटोर के, तुम अपनी प्राण को खो बैठो तो, तुम्हें क्या फायदा होगा?'

'ओह, उसके बारे में चिंतित न हो,' जॉन ने कहा, 'और अब, जवानों, चलों काम पे चले, समय और मौसम किसी के लिए नही रूकता।' 'जॉन, जॉन', आखरी बार बूढ़ी औरत ने पुकारा; मगर, हाय! सब व्यर्थ था। जब वह रोती हुई प्रार्थना कर रही थी, जॉन फसल बटोर रहा था।

ऐसा लग रहा था कि आदमी और पशु, सब काम में लगे रहें क्यों कि उपज बहुत अधिक थी। जब बारिश का पहला बूंद गिरी, तब तक हज़ारों चरखी कोठरे में एकत्र हो गईं। जॉन ने घर में प्रवेश किया। पीछे उसके सारे नौकर आये। विजयोत्साह से जॉन ने कहा, 'अब, नानी, सब सुरक्षित है; प्रचंड़ तूफान आने दो, या सारे तत्व का प्रकोप हो, मुझे जरा भी परवाह नही। मेरी फसल मेरी छत के नीचे है।'

'हाँ, जॉन', विनम्र, नानी ने कहा, 'मगर तुम्हारी छप्पर के ऊपर प्रभु का छप्पर है।'

पृष्ठ ४ पर..विश्राम दिन को...

सत्य की परख!

'शान्त हो जाओ; और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ' (भजन संहिता ४६:१०)

असत्य का खौफनाक सत्य होना

जे- ड- , लिवरपूल और मानचेस्टर रेलवे में नौकरी करने वाला एक मजदूर था। वहाँ अपनी नौकरी के दौरान कुछ समय वह लिवरपूल के निकट एड्ज हिल में ठहरा था। वह एक ऐसा नव जवान था जिस की नजर में 'परमेश्वर का भय मानने की कोई एहमियत नही थी।' बिना कारण ऐसा नही कहा गया, एक उत्तसाहित प्रेरित के मुँह से अभिव्यक्त शब्दों के अनुसार वह एक 'संसार में परमेश्वर-रहित' इनसान था। (इफिसियों २:१२)

वहाँ उसने एक युवती के साथ परिचय बढ़ाया। और उसे नैतिक रास्ते से बहकाने में कामयाब हो गया; तुरंत अपने व्यवहार के परिणामों से बच निकलने के लिए वहाँ से निकल कर दूसरे लाड्ज में जा ठहरा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने एक पापी के प्रति अपनी कृपा के अनुसार, बीमारी रूपी वेदना उस पर आने दी। प्रभु का प्रेम और अनुग्रह पाने का उसे एक अवसर मिला। मगर उसने करुणा का तिरस्कार किया और अपने हृदय को कठोर बनाया।

दुबारा काम में लगने से पहले, अखरी हफ़्ते के दौरान, उस मालकिन से बातें की, जिसके यहाँ वह पहले ठहरा था। दूसरे विषयों के साथ-साथ यह भी पूछा कि बूढ़ा जॉर्ज उसके बारे में पता लगाने वहाँ आये क्या। जॉर्ज उस युवति का पिता था। मालकिन ने उत्तर दिया कि वह आये थे। और यह भी कि वह पिछली बार किस समय आये। 'हाय', उसने कहा, 'जब वह दुबारा आये तो कहना, रेल की पटती पर मेरा देहांत हुआ; और मुझे चैल्डवॉल स्मशान में दफनाया गया।' चैल्डवाल, रेलवे से एक मील दूर और लिवरपूल से चार मील की दूरी पर स्थित एक गाँव है।

एक या दो दिन बाद जॉर्ज दुबारा आये। उपर्युक्त अन्यायी और खौफनाक कथन उसे सुनाया गया। उस असत्य से धोखा खाकर, बेचारा वृद्ध वापस लौटा। अपनी बेटी की लज्जित स्थिति और उसके बहकाने वाले के माने हुए दुखद अंत पर बिलखते वह चला गया।

मगर वह झूठी मिथ्या, जल्दी ही गायब होने वाला थी। पहले अपराध के परिणाम से बच निकलने के लिए कहा गया एक झूठ - भयंकर, असमान्य और अक्षरशः: सच साबित हुआ। वह अधम और नीच आदमी जिसने बहुत ही अपवित्रता से अपनी बातों में मृत्यु के साथ खिलवाड़ किया, उसको क्षण भर में, सृष्टि कर्ता की अदालत के सामने शीघ्र पेश किया गया।

अगले सोमवार की सुबह, १७ मई, सन् १८३०, वह मजदूर दुबरा काम पर निकला। उसी दिन उसे अनन्तकाल में प्रवेश करना पड़ा। उस समय वह पटरी पर था और उपकरणों से घिरा था, जब इंजन जिस के साथ कई कचरा उठाने वाले डिब्बे जुड़े था, वहाँ से गुजर रहा था। वह तुरंत नीचे गिर पड़ा और उसका शरीर बहुत बुरी तरह से कुचला गया। ऐसी स्थिति में उसकी तत्क्षण मौत हो गयी।

परमात्मा का निगूढ़ विधान - फल स्वरूप, उसकी दुष्ट चाल का विशेष भाग, उसके उपर अत्यंत प्रभावात्मक और उसके लिए परम सत्य बन गया। 'वह रेल की पटरी पर मर गया' अनजाने में कहे गये ये उपर्युक्त शब्द, कुछ ही दिनों में वास्तविकता बन गये।

मगर और आगे उसके शब्दों का अक्षरशः सच होना था। हाँलाकि आत्मा शरीर को छोड़ने के बाद, इन सब का उस पर कोई प्रभाव नही, ऐसी बातों को अनगेखी ना करें। क्योंकि यह बिलकुल साफ दिखाई पड़ता है कि जीवन और मृत्यु का 'सर्वोच्य मध्यस्थ' कभी-कभी मनुष्य को उसके ही मुँह से निकले हुए शब्दों में पकड़ लेता है। और उनके सारे अभिशाप, बेलिहाज चाहतें या नहीं, उनके निंदात्मक वाक्यों को, यहाँ तक कि एक-एक अक्षर को सच बना देता है।

जहाँ उसकी अकाल मृत्यु हुई, जे- ड- के आस-पास कोई निकट संबंधी नहीं था। जब से वह एड्जहिल में रहने आया, जिस परिवार के साथ वह ठहरा था, उनका चैल्डवॉल के गिरिजा समाधि-स्थल में जगह था। उसके कुछ साथी मजदूरों ने उसे वॉलटन में दफ़नाने का प्रस्ताव रखा। लिवरपूल के उत्तरी भाग में तीन मील की दूरी पर वॉलटन स्थित था। क्योंकि चैल्डवाल बहुत निकट है। दूसरों ने अर्ज कि की उसे वहाँ दफनाएं।

जिसके साथ गहरा विश्वासघात किया था, उसे धोखा देने के लिए जानबूझ कर झूठ कहने के बाद, हफ्ते के कुछ ही अधिक दिनों के अंदर-अंदर, वह झूठ उसके अपने लिए ही खौफनाक सच बन गयी।

- चुनीहुई

मृत्युंजय ख्रिस्त **पृष्ठ ४**

एकांत का रहस्य

'तुम जानते हो कि जब एक आदमी, अपनी पत्नी के साथ एकांत में हो, तब अपने दिल के अनमोल रहस्य उससे कहता है। ना की जब पूरा परिवार आस पास हो या साथ कोई हो। इसी तरह, जब हमें स्वर्ग का रहस्य जानना हो तो, हम चाहते कि यीशू के साथ अकेले होलो और सुनने के लिए तैयार हो। ताकि वह आये और अपनी आत्मा में चुपके से बातें करें। मेरे लिए, परमेश्वर के साथ बिताए अनमोल लम्हें, बड़ी-बड़ी सभा समारोहों में नही .... केवल यीशु के चरणों में एकांत में बैठने पर संभव हुएहै।'

- डि.एल. मूड़ी।

पृष्ठ ३ से..विश्राम दिन को ...

वह बात कर ही रही थी: अचानक सारा कमरा प्रकाश से भर गया। सब के चहरे पर भय साफ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। एक भयंकर बिजली की कड़क से घर का नीव तक हिल गया। 'देखो!' जो पहले धक्के से बाहर आये, बोले, 'बिजली कोठारे पर गिरी!' सब दरवाजे से बाहर आये। पूरी इमारत ज्वाला की लपट में थी। छत से, सारी चरखी जो अभी-अभी समेटे गये, पूरे जलते दिखाई दिये।

सब आदमी, जो कुछ क्षण पहले बहुत प्रसन्न थे, भौचक्के हो गये। सब के सब उदास और कुछ करने की हालत में नहीं रहे। केवल वह वृद्ध नानी ही अपनी होश को संभाले थी। वह प्रार्थना करते सतत दोहराती गयी, 'मनुष्य सारे जगत को प्राप्त कर ले अपनेऔर प्राण को खो दे तो उसे क्या लाभ? हे, परम पिता, तेरी ही इच्छा पूरी हो जाय, हमारी नही।' धान्य और धान्यागार दोनों जल कर राख दो गये।

उस किसान ने पहले कहा था, 'मैंने अपनी फसल को अपनी छत के नीचे समेट लिया है।' मगर वह अपनी नानी की कही हुई बात भूल गया, 'तेरी छप्पर के ऊपर प्रभु की छप्पर है।'

- चुनीहुई।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।